जूलिया मॉर्गन ने बनाया एक गढ़

लेखनः सलेस्ट डेविडसन मैनिस

चित्रः माइल्स हायमन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



जिस ज़माने में लड़कियों को अपना खुद का घर चलाने से परे सोचने तक की इजाज़त नहीं थी उस वक़्त जूलिया मार्गन ने इमारतें बनाने के सपने देखे। उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में किसी महिला के आर्किटैक्ट (वास्तुकार) बनने की किसीने कल्पना तक नहीं की थी। जूलिया को वास्तुकार बनने के लिए लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी। अपना मकसद हासिल करने के लिए उन्हें साहस, संकल्प और प्रतिभा के साथ अनगिनत बाधाओं को लांघना पड़ा।

वे पेरिस, फ्रांस के मशहूर इकोल द बोज़ा में वास्तुशिल्प का अध्ययन करने वाली पहली स्त्री थीं। इतना ही नहीं उन्हें कैलिफोर्निया की पहली लाइसेंसधारी महिला वास्तुशिल्पी होने का श्रेय भी मिला। अपने लम्बे और असाधारण पेशेवर जीवन में जुलिया ने तक़रीबन आठ सौ इमारतें बनाईं, जिसमें नामी समाचार-पत्र प्रकाशक विलियम रैन्डॉल्फ हर्स्ट का शानदार दुर्ग भी शामिल था। सजीव चित्रों से सजी यह कहानी एक व्यावहारिक स्त्री की है जिसने अपने सपनों को कभी नज़र से ओझल नहीं होने दिया।

जूलिया मॉर्गन ने बनाया एक गढ़

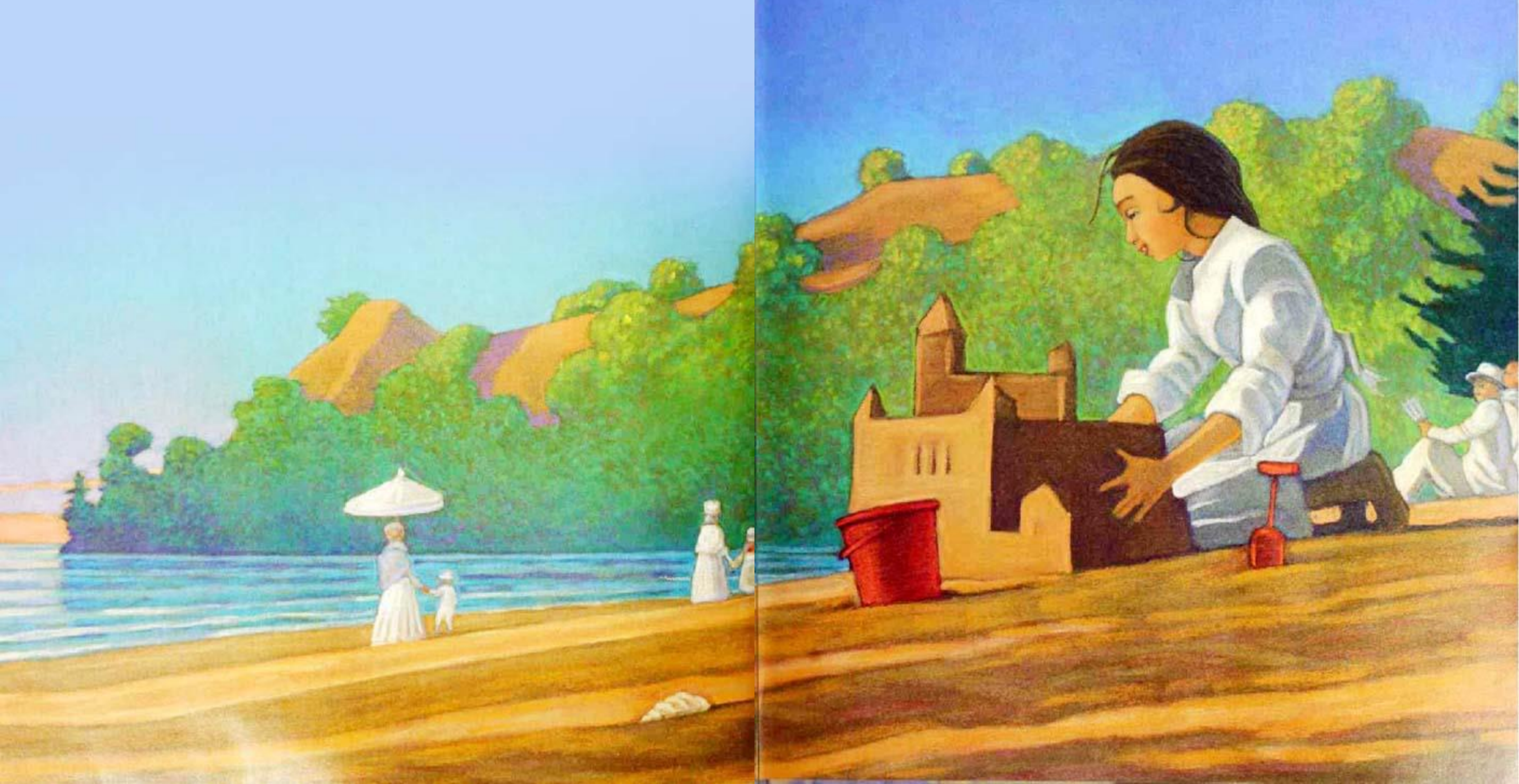


लेखनः सलेस्ट डेविडसन मैनिस

चित्रः माइल्स हायमन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

जूलिया मॉर्गन को गढ़ने-बनाने से प्यार था।



1872 में जन्मी जूलिया, कैलिफोर्निया में सान फ्रैन्सिस्को खाड़ी पर बसे एक छोटे कस्बे ओकलैण्ड में पली-बढ़ी। नन्ही जूलिया को गुड़ियों से खेलने या चाय-पार्टी करने से कहीं ज़्यादा पसन्द था अपने परिवार के खलिहान में ट्रैम्पोलीन पर कूदना और अपने भाइयों के पीछे दौड़ना।

पर बड़े होने के साथ पढ़ाई-लिखाई और छुटपुट काम उसके सप्ताह को भरने लगे। पर सप्ताहान्त मौज-मस्ती से भरे हुआ करते थे। मॉर्गन परिवार नाव से खाड़ी पार कर सान फ्रांसिस्को जाता, जहाँ चमचमाती नई केबल कारें पहाड़ियों पर चढ़तीं थीं और इमारतें खरपतवार की तरह धरती से निकल ऊपर को उठती नज़र आतीं। जूलिया के पिता इन्जीनियर थे और चीज़ें कैसे बनाई जाती हैं, इस बारे में बहुत कुछ जानते थे। वे अपने परिवार को उन जगहों पर भी ले जाते थे जहाँ निर्माण काम चल रहा हो।

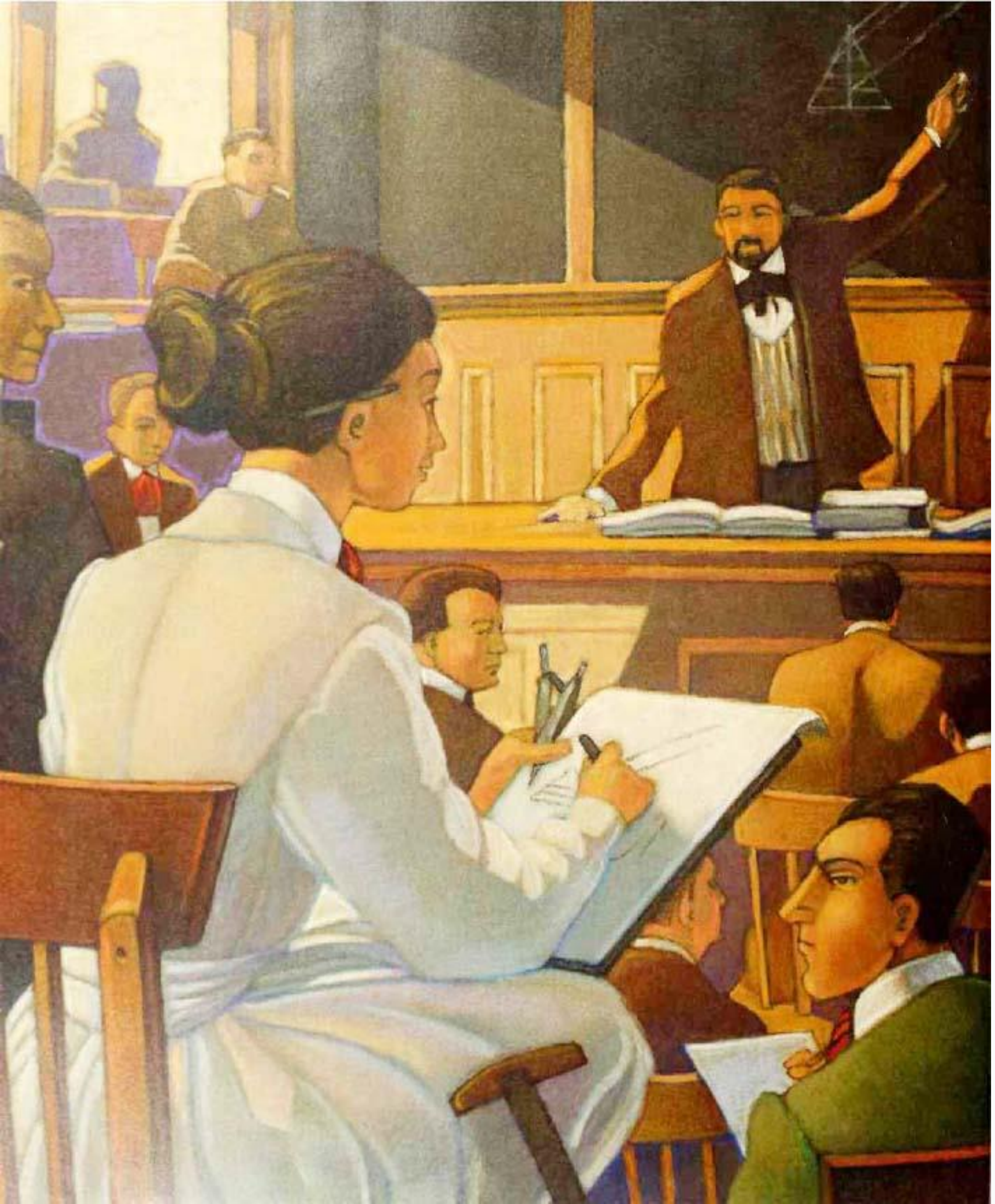
जूलिया के लिए इमारतें विशाल पहेलियों जैसी थी। वह जानना चाहती थी कि सब कुछ आपस में ठीक से मिल कर इमारत को बनाता कैसे है।



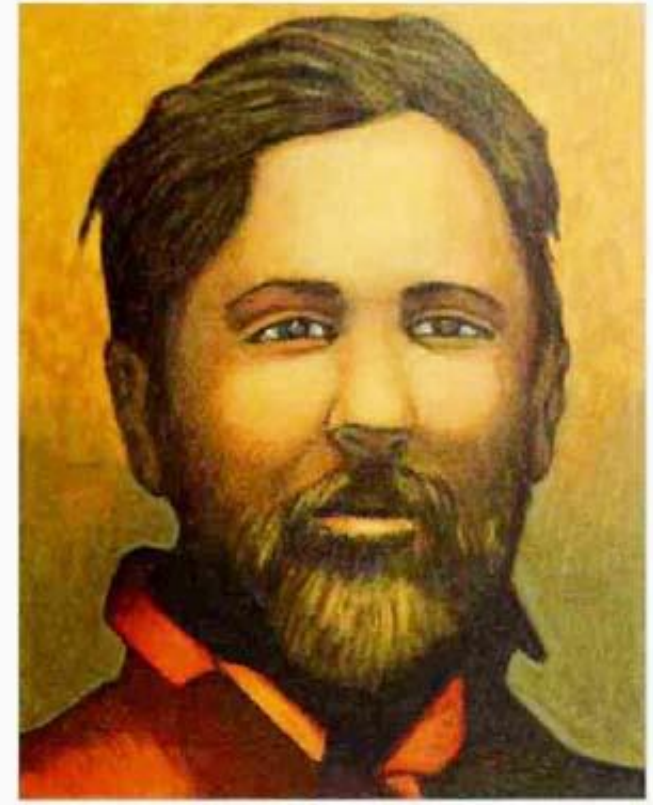




कभी-कभार मॉर्गन परिवार सिर्फ़ खाड़ी पार ही नहीं, बल्की देश के दूसरे छोर तक भी जाता, जहाँ जूलिया अपने कज़न (रिश्ते के भाई) पिएर लेब्रुन से मिलती। लेब्रुन, न्यू यॉर्क के व्यस्त वास्तुकार थे। उन्होंने पत्थरों से बने आकर्षक गिरजे, ईंटों से बने मज़बूत दमकल स्टेशन और मैनहैटन की पहली गगनचुम्बी इमारतों में से एक - मैट्रोपोलिटन लाइफ इन्श्योरेन्स टावर - की न केवल डिज़ाइन तैयार की थी बल्की उनका निर्माण भी करवाया था। जूलिया को लगता था कि कज़न पिएर का पेशा दुनिया का सबसे उत्तेजक पेशा था।



जूलिया वास्तुकार बनने के सपने देखती। ऐसा वास्तुशिल्प सीखने का सपना जो इन्जीनियरिंग के साथ मिला हो और जिसमें डिज़ाइन बनाने का विशेष प्रशिक्षण भी हो। पर उन दिनों दूर-दराज़ की कुछ ही संस्थाएं वास्तुशिल्प सिखाती थीं। सो जूलिया ने 1890 में बर्कली स्थित कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में दाखिला लिया। वहाँ उन्होंने इन्जीनियरिंग की पढ़ाई की। वे अपनी कक्षा में अकेली स्त्री थीं। उन्होंने सीखा कि इमारतें कैसे बनाई जाती हैं, और उन्हें बनाने के कुछ ख़ास तरीके क्यों अपनाए जाते हैं। दरअसल इस पहेली के कई पहलू थेः



भूकम्प, हवा और गुरुत्वाकर्षण के बल किस तरह इमारतों को धकेलते, खींचते हैं? कोई इमारत ज़मीन पर टिकी कैसे रहती है, गिर क्यों नहीं जाती? खम्भे और शहतीर दीवारों और छतों का वज़न कैसे उठाते हैं? कांक्रीट या इस्पात, लकड़ी या ईंट का इस्तमाल कब किया जाना चाहिए?

बर्नर्ड मेयबैक ने, जो जूलिया के पसन्दीदा शिक्षक थे, पहेली के इन हिस्सों को आपस में जोड़ने में मदद की। वे गणित पढ़ाते थे, पर वास्तुकार भी थे। कज़न पिएर की ही तरह उनका भी मानना था कि इमारतों की डिज़ाइन को सुन्दर होना चाहिए पर साथ ही व्यावहारिक और मज़बूत भी। इन दोनों पुरुषों ने पेरिस, फ्रांस में स्थित दुनिया की सबसे उम्दा शाला इकोल द बोज़ा (ललित कला शाला) में वास्तुशिल्प का अध्ययन किया था।





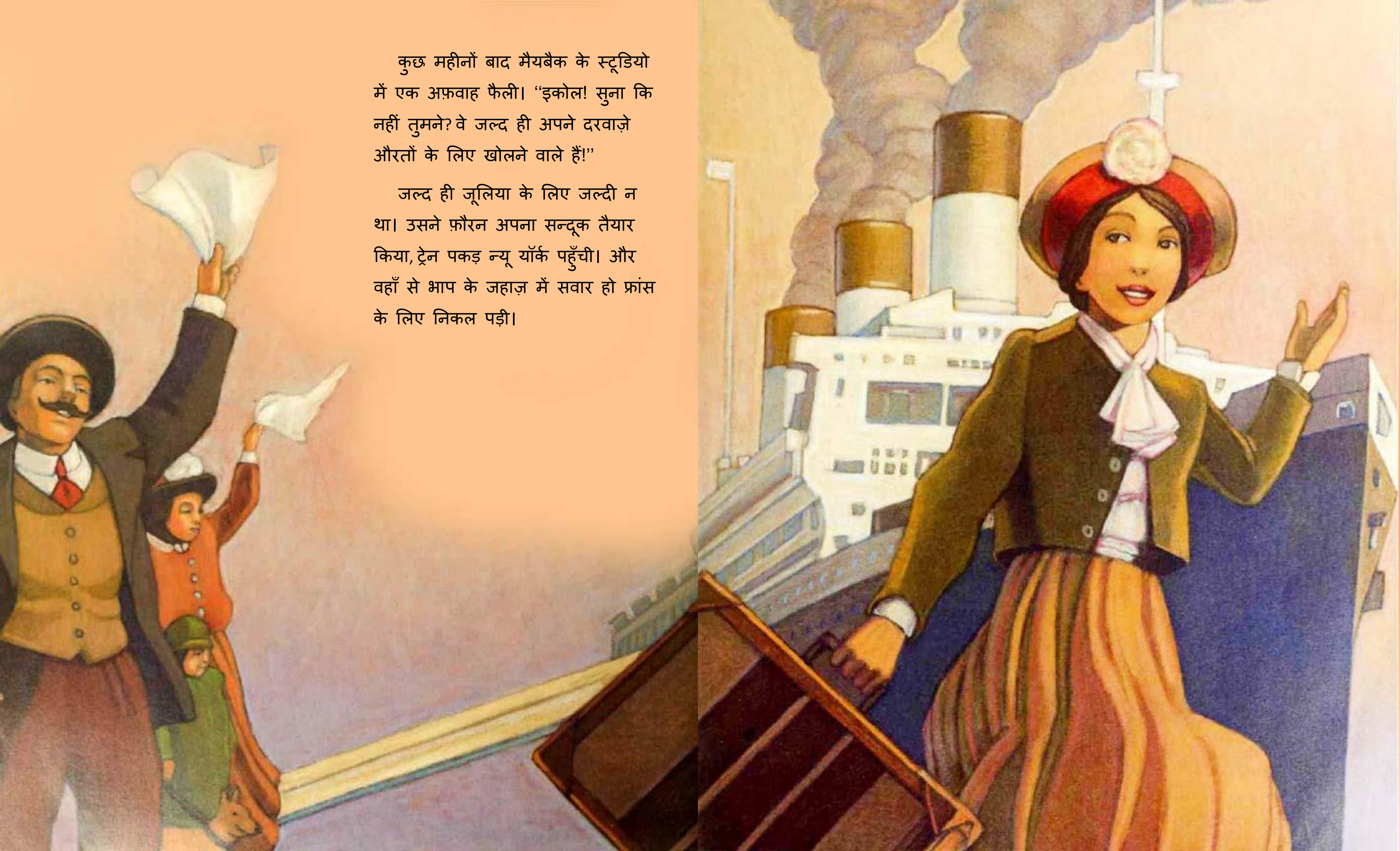
1895 में अपना स्नातक अध्ययन पूरा कर जूलिया मेयबैक के लिए काम करने लगीं। उन्होंने मैयबैक की हर तरह की डिज़ाइनों का बारीकी से अध्ययन किया - देहाती कॉटेज से लेकर विश्वविद्यालय के शानदार भाषण कक्षों तक का।

मैयबैक की भवन योजना यह ध्यान में रख बनाई जाती थी कि लोग उसमें किस तरह काम करेंगे, उसके अन्दर किस तरह चले-फिरेंगे। पर साथ ही उनका मकसद यह भी था कि निर्मित भवन लोगों को किसी भव्य चित्रकारी या संगीत की तरह प्रेरित भी करे।

जूलिया और भी सीखना चाहती थी, वह पढ़ने के लिए इकोल द बोज़ा जाने को छटपटाती थी। पर यह संभव न था। वहाँ सिर्फ़ पुरुषों को ही दाखिला मिलता था।

कुछ महीनों बाद मैयबैक के स्टूडियो में एक अफ़वाह फैली। “इकोल! सुना कि नहीं तुमने? वे जल्द ही अपने दरवाज़े औरतों के लिए खोलने वाले हैं!”

जल्द ही जूलिया के लिए जल्दी न था। उसने फ़ौरन अपना सन्दूक तैयार किया, ट्रेन पकड़ न्यू यॉर्क पहुँची। और वहाँ से भाप के जहाज़ में सवार हो फ्रांस के लिए निकल पड़ी।

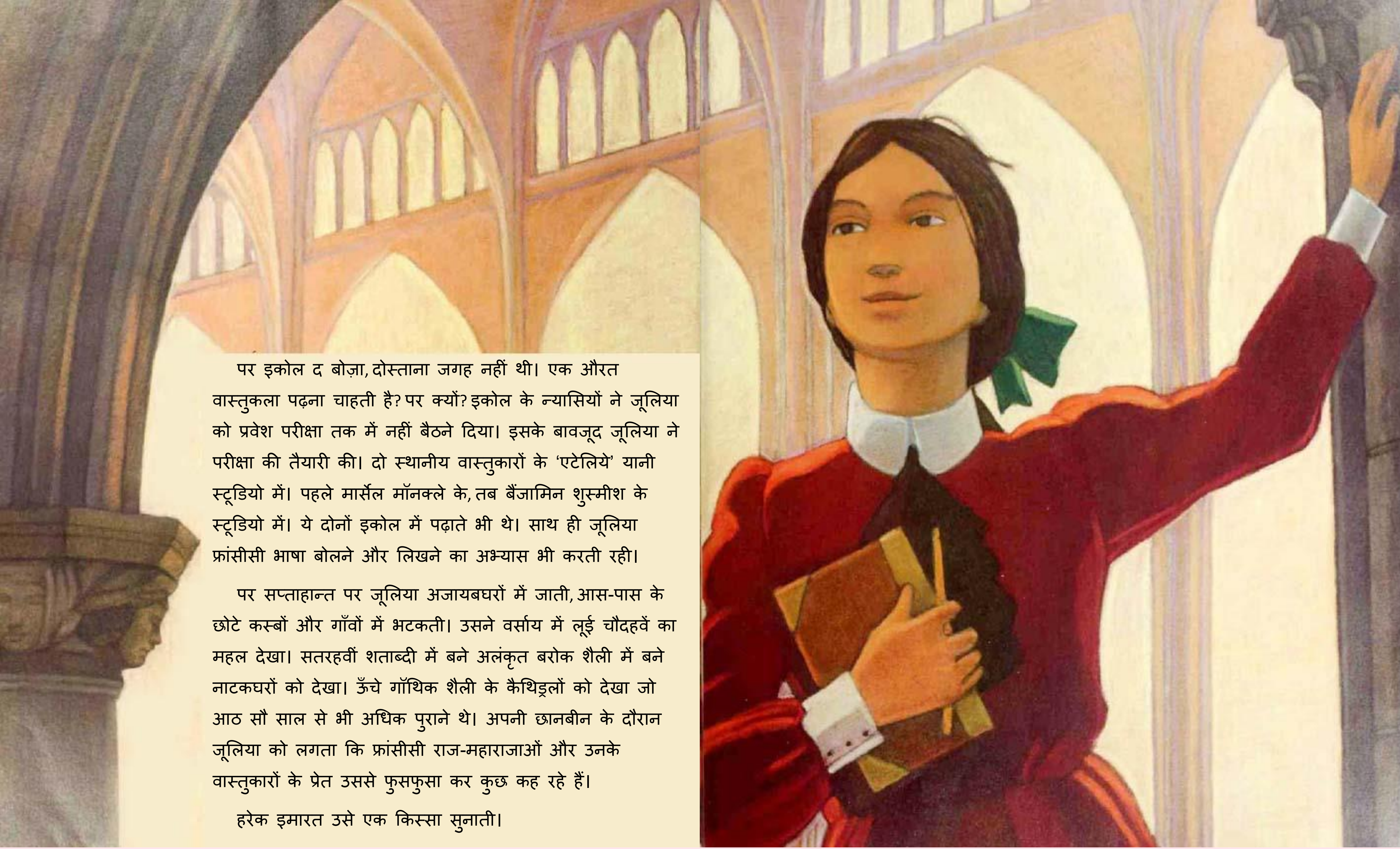


पेरिस ने जूलिया को अचरज से भर दिया। ल्यूरेस के रोमन खण्डहर, नाट्रेडैम के व्यालमुख (गॉर्गायल) आकार के परनाले, उसके पुश्त या टेक, गुस्ताव आइफल की बदनाम लोहे की मीनार! जूलिया को क्षितिज में दूर तक नज़र आने वाली छतों और गिरजों के शिखरों में और ट्युलरी के बागानों से नज़र आने वाले पिरामिड के सुनहले शिखर में, हर जगह सौंदर्य नज़र आता।



जूलिया जहाँ भी जाती, लगातार आँकती, कभी अपनी स्कैचबुक में, कभी किसी लिफ़ाफ़े के पीछे, कागज़ के टुकड़े तक पर। जल्द ही पेरिस उसे एक पुराने दोस्त-सा लगने लगा।





पर इकोल द बोज़ा, दोस्ताना जगह नहीं थी। एक औरत वास्तुकला पढ़ना चाहती है? पर क्यों? इकोल के न्यासियों ने जूलिया को प्रवेश परीक्षा तक में नहीं बैठने दिया। इसके बावजूद जूलिया ने परीक्षा की तैयारी की। दो स्थानीय वास्तुकारों के 'एटेलिये' यानी स्टूडियो में। पहले मार्सेल मॉनक्ले के, तब बैंजामिन शुस्मीश के स्टूडियो में। ये दोनों इकोल में पढ़ाते भी थे। साथ ही जूलिया फ्रांसीसी भाषा बोलने और लिखने का अभ्यास भी करती रही।

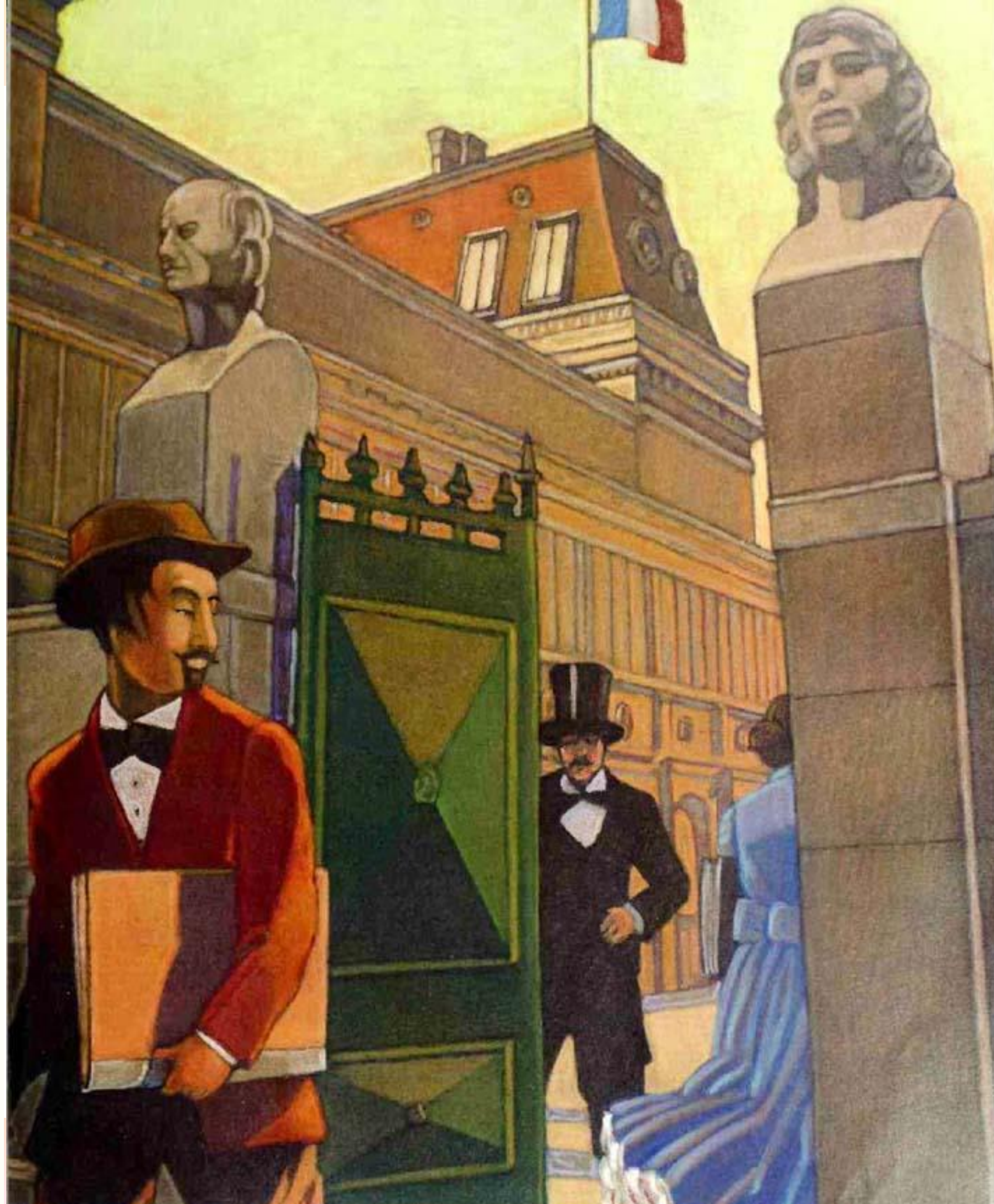
पर सप्ताहान्त पर जूलिया अजायबघरों में जाती, आस-पास के छोटे कस्बों और गाँवों में भटकती। उसने वर्साय में लूई चौदहवें का महल देखा। सतरहवीं शताब्दी में बने अलंकृत बरोक शैली में बने नाटकघरों को देखा। ऊँचे गॉथिक शैली के कैथिड्रलों को देखा जो आठ सौ साल से भी अधिक पुराने थे। अपनी छानबीन के दौरान जूलिया को लगता कि फ्रांसीसी राज-महाराजाओं और उनके वास्तुकारों के प्रेत उससे फुसफुसा कर कुछ कह रहे हैं।

हरेक इमारत उसे एक किस्सा सुनाती।



सप्ताह महीनों में बदले, और महीने साल में तब्दील हुए। जूलिया महिलाओं के होटल से निकल रु ग्युनेगो के एक सस्ते अपार्टमेंट में रहने लगी। वास्तुकला की क़िताबें ख़रीद पाने के लिए वह कई बार खाना तक न खाती।

तब 1897 की पतझड़ में इकोल के विशाल इस्पाती दरवाज़े कैलिफोर्निया की मादमोज़ैल जूलिया मॉर्गन के लिए चरमरा कर खुल गए। पेरिस में डेढ़ साल तक धक्के खाने के बाद उसे इकोल की लम्बी और कठिन परीक्षा में बैठने दिया गया। पर इकोल ने जूलिया से यह परीक्षा एक नहीं, दो नहीं, बल्की तीन बार दिलवाई। तब कहीं जाकर 1898 की अक्तूबर से शुरू होने वाले वास्तुशिल्प के कार्यक्रम में उसे दाख़िला मिला। उस वक़्त जूलिया छब्बीस वर्ष की थीं।





इकोल में मोस्यू मज़ू अपने स्टीरियोदर्शक से त्रि-आयामी चित्र दिखाते हुए वास्तुशिल्प के इतिहास पर बोलते। मोस्यू मोंडिट पूरी बारीकियों के साथ यह बताते कि इमारतों को अन्दर से बाहर तक किस तरह बनाया जाता है। गणित के अनगिनत पाठ्यक्रम थे, चित्रांकन के भी। जूलिया इमारतों की डिज़ाइन बनाने को आतुर थीं। और जब उन्होंने यह करना शुरू किया, उन्हें वे तमाम सुन्दर इमारतें याद आईं जिन्हें उन्होंने देखा था, जिनका अध्ययन किया था।

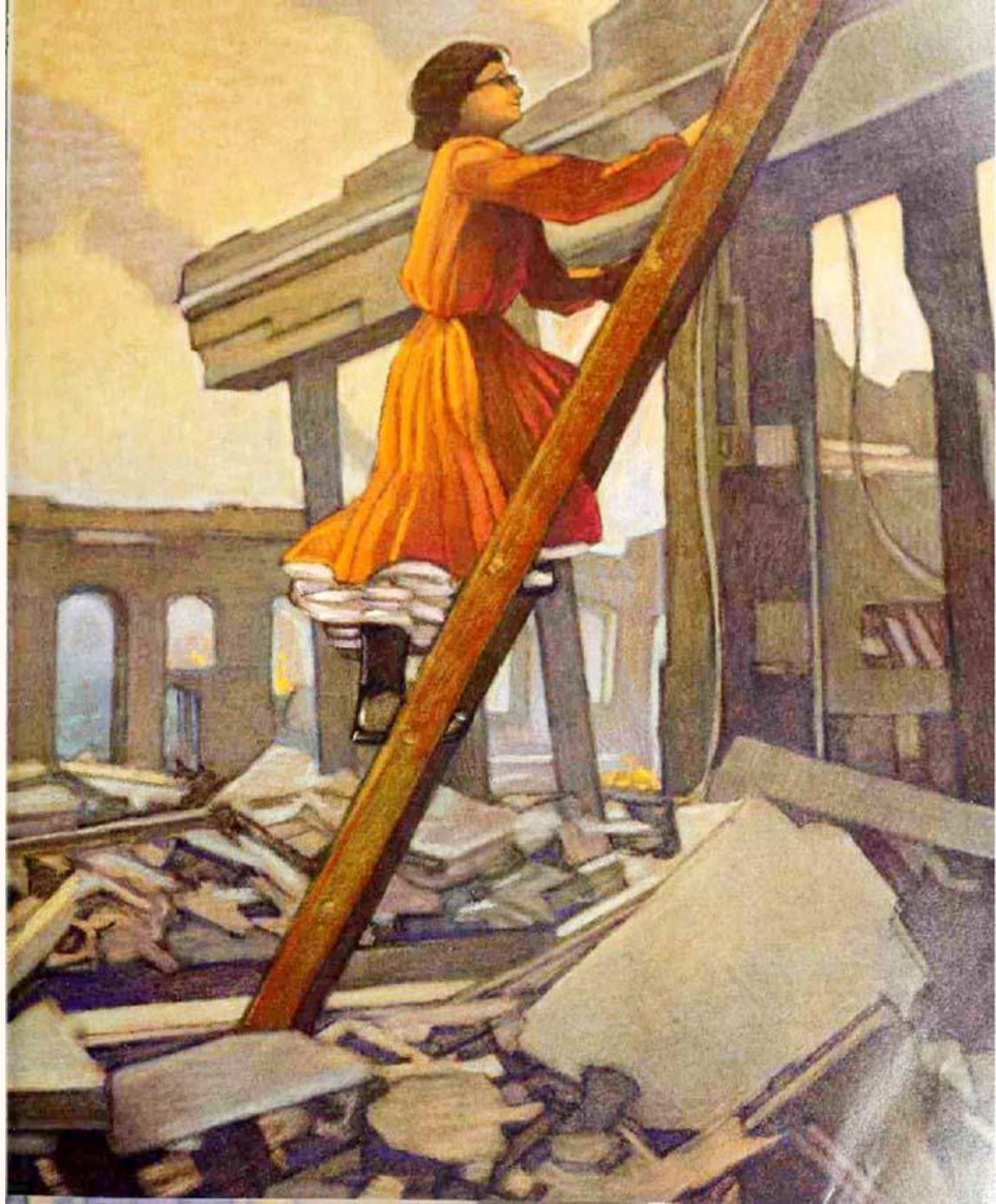
इकोल में अपनी आखिरी परियोजना में उन्हें प्रथम स्थान का पदक मिलाः एक भव्य महल नाटकघर (पैलेस थियेटर) जो ग्रीक मिथकीय चरित्रों से सजाया गया था। इस पुरस्कार की घोषणा 1902 के बसन्त में उनकी तीसवीं सालगिरह के पहले की गई थी।





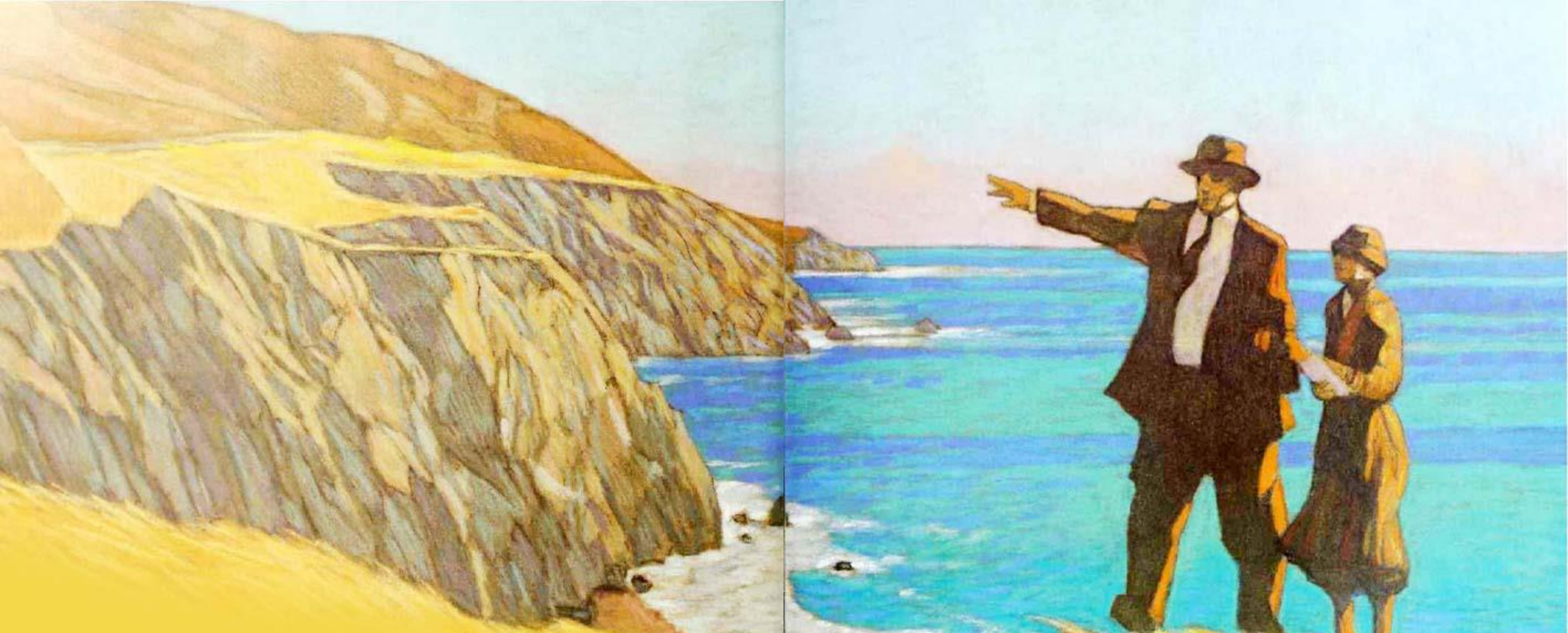
फ्रांस में छह साल बिताने के बाद जूलिया 1904 में घर लौटीं और पहली लाइसेंसशुदा महिला वास्तुकार के रूप में सान फ्रैन्सिस्को में अपना स्टूडियो खोला। उनके पास रिहायशी मकानों की डिज़ाइन बनाने के कई अनुरोध आए, जिनमें कई उनके स्कूल के सहपाठियों के थे। तब उनके गृह नगर ओकलैण्ड के मिल्स कॉलेज ने अपने परिसर में एक - बैल टावर, यानी मीनार घंटाघर बनाने की ज़िम्मेदारी जूलिया को सौंपी। जूलिया ने मीनार को इस्पात की छड़ों और प्रतिबलित (रीइन्फोर्सड) कांक्रीट से बनाया ताकि वह मज़बूत हो और आसानी से जले नहीं। कई लोगों को जूलिया के तरीके पर शंका हुई। उन्हें लगा कि "यह तरीका बेहद महंगा है। दीवारें कुछ ज़्यादा ही मोटी हैं! औरतें भवन निर्माण के बारे में जानती भी भला क्या हैं?"

अप्रेल 1906 में सान फ्रैन्सिस्को खाड़ी के इलाके को एक भारी भूकम्प ने झकझोरा। हज़ारों लोगों की मौतें हुईं। सान फ्रैन्सिस्को मलबे के ढेर में तब्दील हो गया। पर मीनार घंटाघर और वे तमाम इमारतें जस की तस खड़ी थीं जिनकी डिज़ाइन जूलिया ने बनाई थे। पर जूलिया ने इस कामयाबी पर खास ध्यान नहीं दिया। आख़िर एक पूरे शहर को फिर से बनाना जो था।



अब जूलिया को सब जानने लगे थे। जिस वक़्त विलियम रैन्डॉल्फ हर्स्ट ने जूलिया से सम्पर्क साधा वे 450 परियोजनाओं को पूरा कर चुकी थीं। 1919 की एक दोपहर हर्स्ट जूलिया के दफ्तर में आए। वे एक बेहद अमीर और प्रभावशाली समाचार-पत्र प्रकाशक थे। हर्स्ट सान फ्रैन्सिस्को में पैदा हुए थे, यानी जहाँ जूलिया पैदा हुईं उसके ठीक सामने, पर खाड़ी के उस पार। हालांकि वे अब न्यू यॉर्क में रहते थे, वे हर गर्मियों में मध्य कैलिफोर्निया लौटते और सान्ता लूसिया पहाड़ियों में सान सिमोन गाँव के ठीक ऊपर अपनी जायदाद में तम्बू गाड़ कर रहते। "मिस मॉर्गन," हर्स्ट ने कहा, "सान सिमोन में हम अपने रैंच में खुले में तम्बू गाड़ कर रहने से थक चुके हैं। सो मैं वहाँ एक छोटा-सा कुछ बनाना चाहता हूँ।



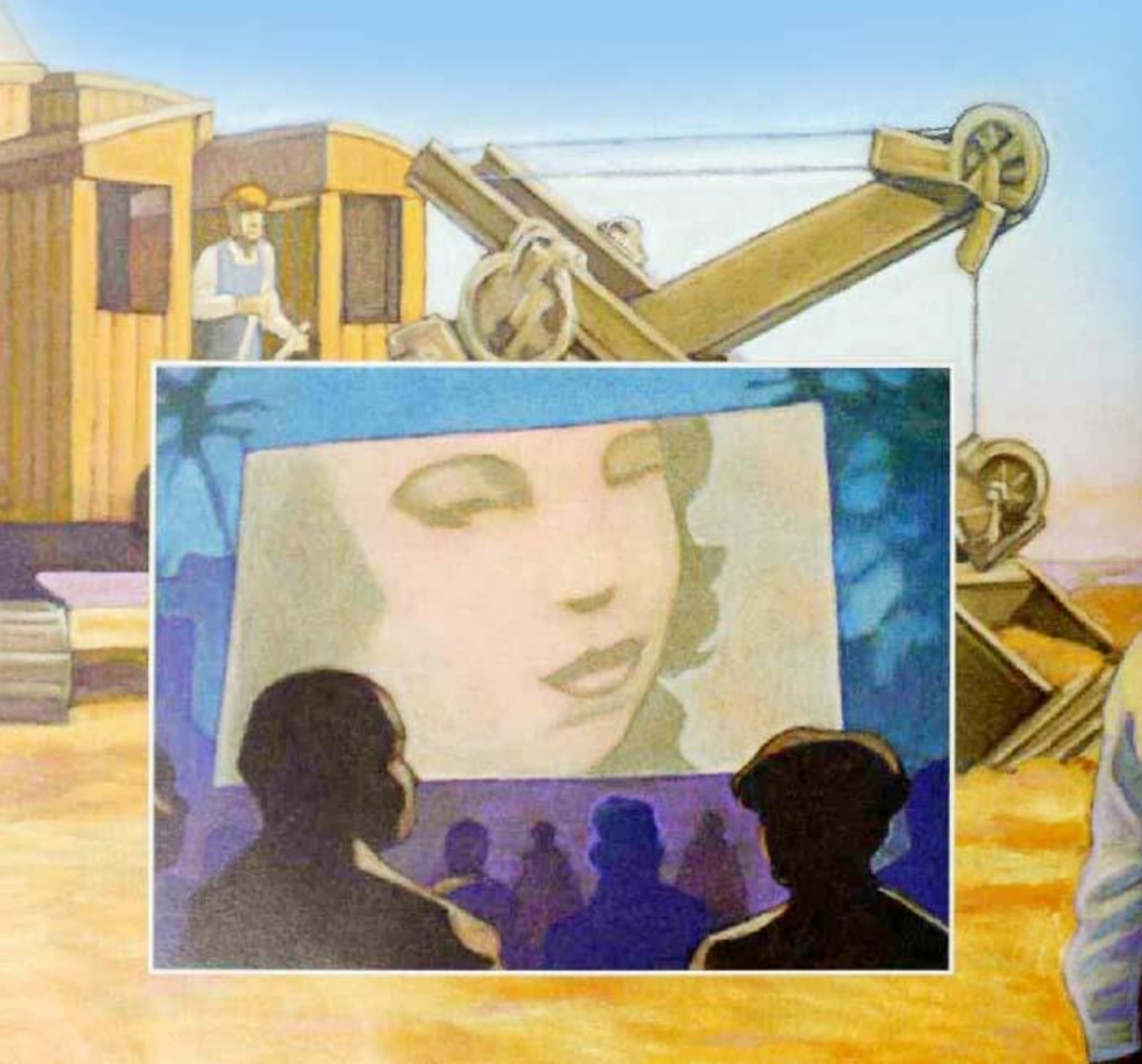


मिस्टर हर्स्ट के लिए किस तरह का घर बिलकुल सही रहेगा? जूलिया के ज़ेहन में एक नाटकीय जगह की कल्पना जगी जिसमें वे मशहूर लोगों का, जैसे फिल्मी सितारों और राष्ट्रपतियों का, स्वागत व मनोरंजन कर सकें, पर साथ ही अपने एंटीक (पुरानी दुर्लभ वस्तुएं) के विशाल ख़ज़ाने को प्रदर्शित भी कर सकें। जूलिया के विचारों ने पहले अनगढ़ रेखाचित्रों, तब सावधानी से बनाए चित्रों, और अंत में रंगचित्रों का रूप लिया। मिस्टर हर्स्ट खुश हुए। इसके बाद जूलिया ने सबसे ऊँचे पहाड़ पर एक बड़ी मुख्य इमारत और उसके गिर्द मेहमानों के लिए तीन छोटी इमारतों के नक्शे बनाए। उसमें बारीकियाँ जोड़ी गईं, तब मॉडल बनाए गए। इतना ही नहीं, इमारतों के साथ ही हरे-भरे बाग-बगीचों, पैदल पथों की योजना भी बनी जो इन इमारतों को आपस में जोड़ते हों। समूची परियोजना पहाड़ के शिखर पर बसे एक स्वप्निल गाँव का अहसास देती थी।

पर निर्माण शुरू हो सके उसके पहले भी बहुत कुछ करना था। पहाड़ी पर ऊपर जाने का मौजूदा रास्ता पशुओं की पगडंडी भर था। और रेलरोड इतनी दूर था कि निर्माण का सामान उससे नहीं पहुँचाया जा सकता था। सो पहले एक नई सड़क बनाई गई। सान सिमोन में बने हर्स्ट के घाट को बड़ा किया गया ताकि सामान लाया जा सके। जल्द ही ट्रकों और घोड़ों से जुते वाहनों में लट्ठे, लोहे की छड़ें और टनों सीमेंट पहाड़ के पास पहुँचने लगे। कुछ ही समय बाद बुल डोज़र, क्रेन और पत्थर तोड़ने की मशीनें भी आ पहुँचीं।

ढ़ेरों मज़दूर सान सिमोन में जमा होने लगे। ताकतवर पुरुष जो भारी मेहनत का काम का सकें और कुशल कारीगर जैसे, बढ़ई, प्लास्तर करने वाले, पत्थर और लकड़ी तराश। पहले उनके रहने-सोने के लिए तम्बू लगाए गए, तब पक्की जगह बनाई गई। रसोइए लगाए गए ताकि उनका खाना बनाया जा सके।

इस चहल-पहल के बावजूद वह पहाड़ी एकाकी जगह थी। सो जूलिया मॉर्गन ने यह व्यवस्था करवाई कि सभी कामगार सप्ताह के अंत में एक फिल्म देख सकें।



पहाड़ के शिखर को डायनामाइट से सपाट किया गया, दूसरे इलाकों को घोड़ों की मदद से पीट कर सपाट किया गया। इमारतों की नींव डाली गई। दीवारें बनाने के लिए इस्पात की छड़ों के गिर्द लकड़ी के ढ़ांचों में कांक्रीट की परतें उडेली गईं। पाइप, बिजली के तार, दरवाज़े और खिड़कियों के ढ़ांचों को दीवारों पर लगाया गया। पहाड़ी पर धीमे-धीमे इमारतें उठने लगीं।



दीवारों को बाहर से अंतिम रूप देने के लिए चूना-पत्थर और कांक्रीट से ढ़ाले गए पत्थरों का इस्तमाल किया गया। मुख्य इमारत, ला कासा ग्रांडे के बाहरी कोने सागौन लकड़ी से उकेरे गए व्यालमुखों से सजाए गए। मिस्टर हर्स्ट ने स्पेन से एंटीक (कीमती पुरानी) छतों, ढ़ालों और अलावों को खरीदा और लगवाया। जूलिया ने टाइलों और रंगीन काँच की खिड़कियों की डिज़ाइनें तैयार कीं।

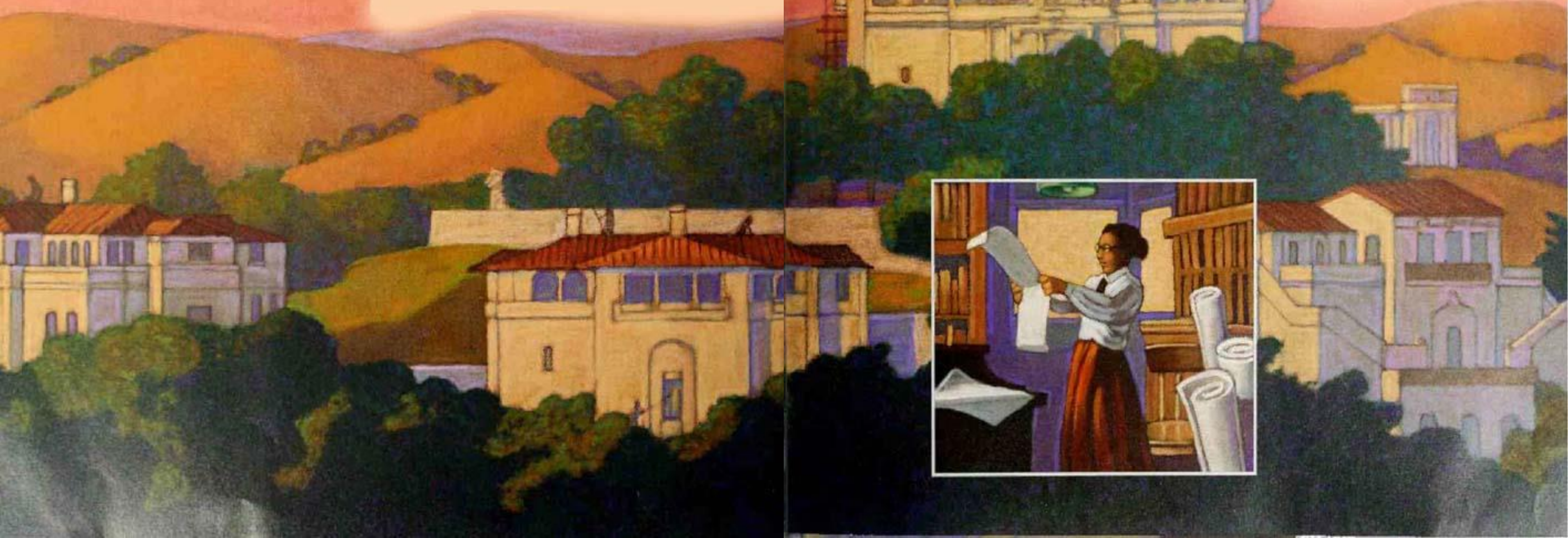






जिस समय जूलिया मिस्टर हर्स्ट के 'गढ़' पर काम कर रही थीं, उसी दौरान उन्होंने अपने दूसरे मुवक्किलों की सैकड़ों परियोजनाएं भी पूरी कीं। पर हर शुक्रवार की रात वे सान फ्रैन्सिस्को से दक्षिण की ओर सान लूई ओबिप्सो जाने वाली ट्रेन पकड़तीं। वहाँ से सान सिमोन की आखिरी छप्पन मील की दूरी तय करने के लिए टैक्सी लेतीं। सुबह नाश्ते के पहले बस एक छोटी सी झपकी ले पाने का समय उन्हें मिलता। यह थकाऊ सफ़र जूलिया ने पाँच सौ से भी अधिक बार किया।

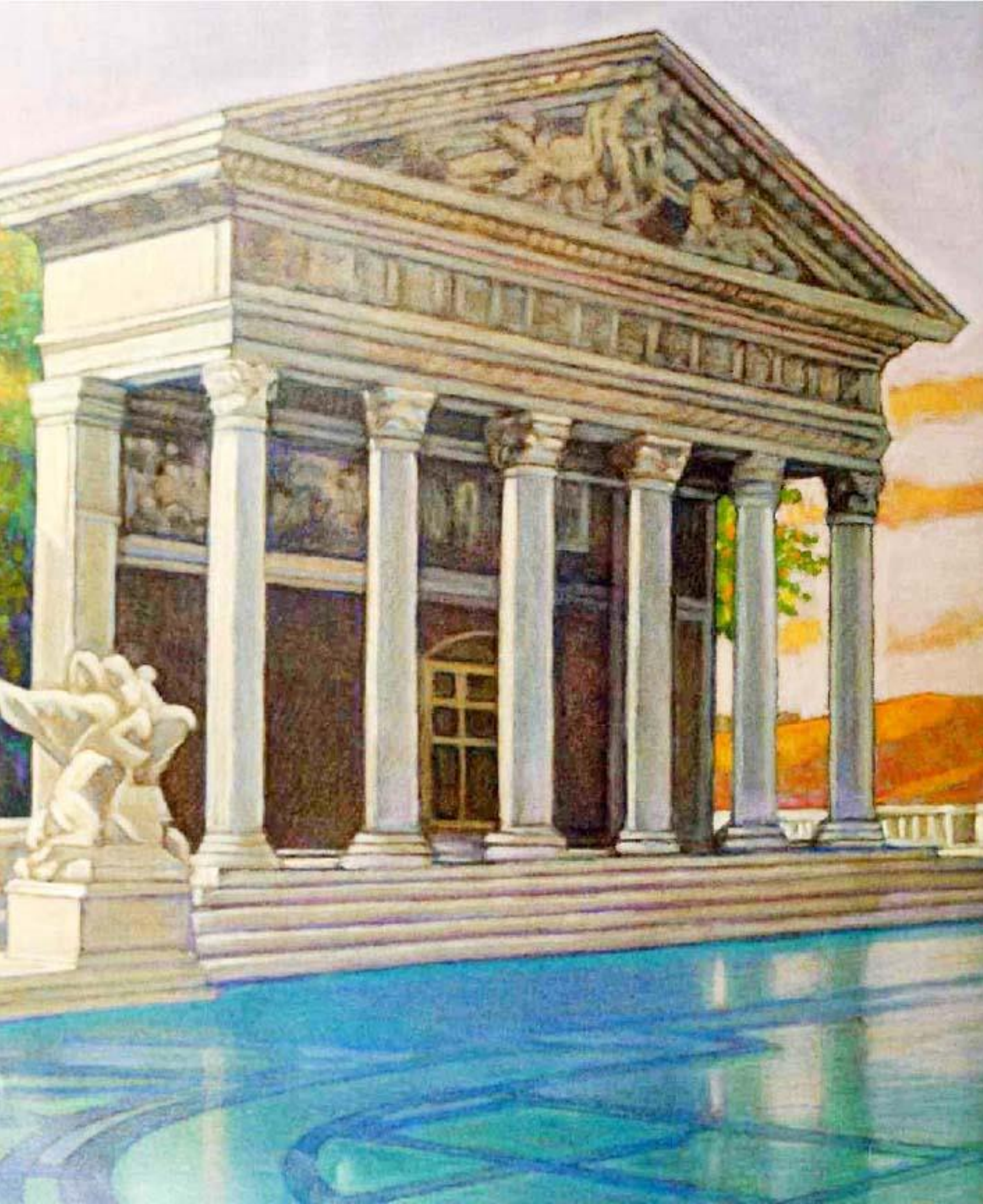
जूलिया के सप्ताहान्त निर्माण स्थल का मुआयना करते, अनुबंधकर्ताओं और कारीगरों के साथ बैठकें करते, योजना को सुधारते, और मिस्टर हर्स्ट से चर्चा करते बीतते। जूलिया ने कई सालों तक अपने सप्ताहान्त ला कासा ग्रांडे के सहारे टिके एक छोटे से कमरे में काम करते बिताए।



पर सब कुछ योजना के हिसाब से नहीं चला। मिस्टर हर्स्ट ने एक धुंआकश (चिमनी) को तुड़वाया, उसे हटवा कर दूसरी जगह लगवाया, तब वापस तुड़वा कर ठीक उसी जगह लगवाया जहाँ वह पहले बनाई गई थी। एक बार जूलिया ने कहा कि ला कासा ग्रांडे की छत से नज़ारा बेहद खूबसूरत है। मिस्टर हर्स्ट ने इमारत में एक तीसरी मंज़िल जोड़ने को कहा। फ़ौरन! और भी तमाम नई चीज़ें जोड़ी गईं - एक लाल वैल्वट से मढ़ा मूवी थियेटर, एक हवाई पट्टी और एक चिड़ियाघर! और तब एक नैपच्यून ताल भी बनया गया। रोमन शैली में बना यह तरण ताल समुद्र को देखते हुए था। बारह सालों में जूलिया को इसकी डिज़ाइन को पाँच बार बदलना पड़ा।

जूलिया मॉर्गन निर्माण को लेकर मिस्टर हर्स्ट के उत्साह को न केवल समझती थीं, बल्की उसे साझा भी करती थीं। पर जब वे अपने तड़क-भड़क पसन्द मुवक्किल से किसी बात पर एकमत न होतीं, तो अपनी राय सामने रखने से हिचकती भी नहीं थीं। शायद यही कारण था कि विलियम रैन्डॉल्फ हर्स्ट, जो अमरीका के मुँहफट्ट और प्रभावशाली व्यक्ति थे, जूलिया पर किसी दूसरे इन्सान से ज़्यादा भरोसा करते थे।





जूलिया ने अपने पचास वर्षीय पेशेवर जीवन में आधे से भी कुछ ज़्यादा समय सान सिमोन में मिस्टर हर्स्ट के सपने के घर पर काम करते बिताए। वहाँ का निर्माण कार्य आख़िरकार 1947 में, यानी शुरू होने के अट्ठाइस बरस बाद बन्द हुआ। जूलिया मॉर्गन का बनाया यह गढ़ आज भी उनकी कहानी कहता है।

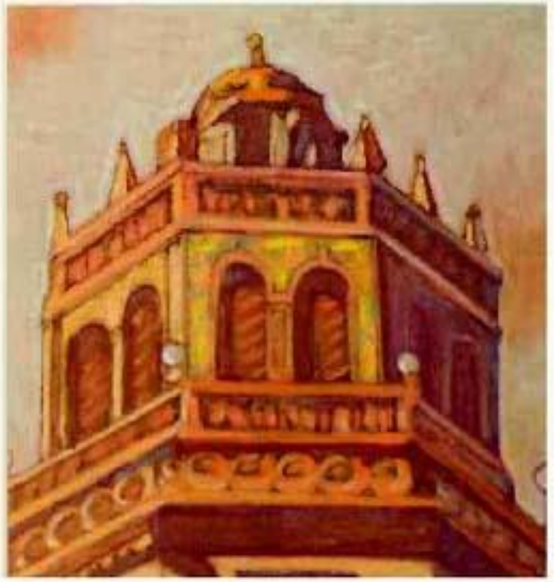


लेखिका की कलम से



जूलिया मॉर्गन से मेरा परिचय एक फैशन-पत्रिका के माध्यम से हुआ जिसमें फैशन मॉडल संध्या की पोशाकें पहने, विभिन्न भंगिमाओं में एक परीकथा जैसे गढ़ के सामने खड़ी थीं। फुटनोट में यह जानकारी दी गई थी कि वह गढ़ विलियम रैन्डॉल्फ हर्स्ट की विख्यात जायदाद थी, जिसकी परिकल्पना और निर्माण कैलिफोर्निया की वास्तुकार जूलिया मॉर्गन ने किया था। "एक महिला?" मैं चौंकी। मुझे अचरज हुआ, कौतुहल भी। सो मैंने इस क़िताब के लिए शोध शुरू कर दी।

पेरिस में पढ़ाई करते समय जूलिया ने अपने परिवार और दोस्तों को जो ख़त लिखे थे, उनसे एक दृढ़ संकल्प वाली युवती उभरती है, जिसका दिमाग़ शालीन होने के साथ जीवन्त भी था। पर बाद में जूलिया ने अपने काम के बारे में अधिक नहीं लिखा। उन्हें लगता था कि काम का बखान करने के बदले काम को ही खुद बोलना चाहिए। और सच, उनका काम ठीक यही करता भी है।



विश्वविद्यालयों और दूसरी संस्थाओं की इमारतों के शास्त्रीय अनुपात और उनकी सज्जा जूलिया के उस प्रशिक्षण का संकेत देते हैं जो उन्होंने इकोल द बोज़ा में पाई थी। पर साथ ही उनकी बनाई गई इमारतों में कैलिफोर्निया का एक विशेष प्रभाव भी नज़र आता है। उनके बनाए रिहायशी मकान प्राकृतिक परिदृश्य से उभरते दिखते हैं, पर उस पर हावी नहीं होते। यह "जैविक" अहसास जूलिया इमारतों को निर्माण स्थलों के प्राकृतिक आकारों के अनुरूप बना कर और अपनी डिज़ाइन में स्थानीय लकड़ियों और नदी के पत्थरों, पेड़-पौधों आदि का इस्तमाल कर पैदा करती थीं।

इस सबके बावजूद जूलिया का प्राथमिक सरोकार उन लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना रहता था, जो उन इमारतों-स्थानों का उपयोग करने वाले थे। जब वे किसी परिवार के लिए घर बना रही होतीं तो वे बच्चों से कहतीं कि वे उन चीज़ों के चित्र बनाएं जो वे अपने घर में चाहते हैं। कोई अचरज नहीं कि उनके बनाए कई घरों में छिपने की ख़ुफिया जगहें, और ऐसी सीढ़ियाँ और दरवाज़े हैं, जो कहीं नहीं ले जाते!

जब जूलिया को बर्कले के सेंट जॉनस् प्रेसबाइटेरियन गिरजे की डिज़ाइन बनाने का काम सौंपा गया, बजट में इतना पैसा न था कि दीवारों की पुताई और छत का प्लास्तर किया जा सके। तो जूलिया ने रेडवुड से बनी दीवारों, शहतीरों और पट्टों के ढांचों को ही डिज़ाइन का हिस्सा बना लिया।

सान फ्रांसिस्को के भूकम्प से क्षतिग्रस्त हुए फेयरमाउन्ट होटल की मरम्मत का बड़ा काम 1906 में जूलिया को सौंपा गया। इसके बाद अनेक छोटे-बड़े घर, महिला संगठनों के कार्यस्थल, अस्पताल, गिरजे, व्यावसायिक इमारतें और आख़िरकार एक गढ़ बनाने तक का काम भी उन्हें मिला।

विलियम रैन्डॉल्फ हर्स्ट की माँ जनहितैषी फीबी एपरसन हर्स्ट, जूलिया की पहली संरक्षकों में एक थीं, और जूलिया की क़रीबी दोस्त भी। उनके प्रभाव से जूलिया यंग विमेन्स क्रिश्चन एसोसिएशन की सबसे बड़ी परियोजना, एसिलोमार में एक प्रमुख वास्तुकार रहीं। यह कैलिफोर्निया के पैसिफिक ग्रोव में बना सम्मेलन केन्द्र और ग्रीष्म शिविर परिसर था। आज यह एक स्टेट पार्क है जिसमें कला व शिल्प संकुल है। हज़ारों सैलानी हर साल इसका आनन्द उठाते हैं।

जूलिया द्वारा बनाई गई इमारतों में, छोटे घरों से लेकर हर्स्ट के परीकथा सरीखे गढ़ तक हैं। पर मेरी पसन्दीदा इमारत है, एसिलोमार में बना डॉज चैपल (प्रार्थना घर)। यह ख़ूबसूरत शरणस्थल ऐसी जगह बनाया गया है जहाँ युवतियाँ प्रेरणा पाने के साथ हुनर भी सीख सकें। इसकी बड़ी खिड़कियाँ, पॉलिश किए अन्दरूनी हिस्से को सूरज की रोशनी से सराबोर करती हैं, और उनके बाहर हरे-भरे जंगल को देखा जा सकता है। इसमें बने कोष्ठक और हटाई जा सकने वाली आड़ें, अध्ययन और बातचीत करने का एकांत उपलब्ध करवाती हैं। वेदी के पीछे जो विशाल खिड़की है उससे रेत के टीले और नीला अथाह प्रशान्त महासागर नज़र आता है।

एक सुहाने बसन्त के दिन मैं चैपल में अकेले बैठी थी, उसके ढांचे के प्रकाश और सुघड़ता ने मेरी इन्द्रियों को सराबोर कर दिया। "अपने सपनों को गढ़ो!" चैपल मानो मुझे कह रहा था। "कुछ भी संभव है!"

सान सिमोन के बारे में कुछ रोचक तथ्य

जूलिया मॉर्गन ने 1919 से 1942 तक इस निर्माण पर होने वाले व्यय का अनुमान 4,717,000 डॉलर लगाया था। इन तेइस वर्षों के दौरान अपने काम के लिए जूलिया ने 70,755 डॉलर कमाए थे।

कासा ला ग्रांडे 60,645 वर्ग फीट (लगभग डेढ़ एकड़) बड़ा है। इसमें 115 कमरे हैं, जिनमें 38 शयन कक्ष हैं और 41 नहान घर हैं। समूचा परिसर कुल 90,080 वर्ग फीट का है, जो 128 एकड़ तक फैले बाग-बगीचों के बीच बना है।

सान सिमोन में ठहरने वाली हस्तियों में राष्ट्रपति कैल्विन कूलरिज, ब्रितानी प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल, नाटककार जॉर्ज बर्नर्ड शॉ, अभिनेता चार्ली चैपलिन, ग्रेटा गार्बो और कैरी ग्रांट, विमान चालक चार्ल्स लिंडबर्ग, एमेलिया एरहार्ट व हार्वर्ड ह्यूस शामिल थे।

सान सिमोन का चिड़ियाघर एक समय दुनिया का सबसे बड़ा निजी चिड़ियाघर हुआ करता था। इसमें शेर, पोलर भालू, तेंदुए, जिराफ बड़े अहातों में सुरक्षित रहते जबकि कंगारू, ज़ेब्रा और याक पहाड़ी के आस-पास खुले घूमा करते। सड़क पर लगे संकेत बताते थे कि "सड़क पर पहला अधिकार पशुओं का है!" (एनिमल्स हैव द राइट ऑफ वे)

345,000 गैलन का विशाल नैपच्यून पूल प्रतिबलित कांक्रीट की शहतीरों पर लटका था। जूलिया ने इसकी रचना ऐसे की थी ताकि भूकम्प के झटकों के साथ वह अधर टिके हुए झूले।

सान सिमोन का काम 1942 में नाटकीय रूप से धीमा हुआ पर 1947 तक बन्द नहीं हुआ। मिस्टर हर्स्ट की महत्वाकांक्षी परियोजना पूरी नहीं हो सकी।

पुरस्कृत लेखिका सेलेस्ट डेविडसन मैनिस ने *वन लीफ राइडस् द विण्ड, द क्वीन्स प्रोग्रेस,* और *स्नैपशॉट : द वन्डर्स ऑफ मॉन्टैरी बे* की भी रचना की है। वे अपने परिवार के साथ लॉस एन्जलीस, कैलिफोर्निया में रहती हैं।

वरमोन्ट में जन्मे माइल्स हायमन ने जूलिया की ही तरह इकोल द बोज़ा में अध्ययन किया। उनकी कृतियाँ अमरीका व यूरोप की कला दीर्घाओं, उत्सवों व अजायबघरों में प्रदर्शित हुईं और न्यू यॉर्क टाइम्स, इन्टरनैशनल हैरल्ड, ट्रिब्यून, द बॉस्टन ग्लोब व न्यू यॉर्कर में भी छपीं। बच्चों के लिए चित्रित उनकी दूसरी क़िताबें हैं - लूक फोमेन्टल की *ब्राडवे चिकन,* ओ. हैनरी की लघुकथाओं का संकलन व शर्ली जैकसन की *9 मैजिक विशेस्* ।